*** आबू तीर्थ महान***

धरती पर आया स्वर्ग रचने निराकार
शिव लेकर ब्रह्मा तन अवतार
रचा उसने अपना एक आलौकिक परिवार
रची उसने रूहानी सेना, शिव् शक्तियां
दिया ज्ञान कलश कहलायी ,ब्रह्माकुमारी
सृष्टि का चैतन्य बीज रूप है शिव
दिया आदि मध्य अंत का पूरा ज्ञान
आबू की भूमि को बनाया उसका आधार
करी एक वैकुण्ठ की रचना देकर अपना प्यार
सच्चा तीर्थ बना जिसकी नही मिसाल
चैतन्य देवी-देवता यहाँ विचरते
करके ज्ञान श्रृंगार
साकार ब्रह्मा ने रखी यहाँ से
नयी दुनिया की बुनियाद
अविनाशी रूद्र अश्वमेद ज्ञान यज्ञ
की हुई अनुपम शुरुवात
होगी जिसमे पूरी दुनिया की
विकृति , प्रकृति सब स्वाहा
चैतन्य माडल है दिलवाडा मन्दिर का
होती दिखायी तपस्या नीचे, ऊपर स्वर्ग
भारत बना जब से सर्वोच्च

सच्चा तीर्थ स्थान
धरती पर जिसके आया
परमपिता शिव भगवान्
स्वर्ण नगरी यह बनी
कहलायी ,सोने की लंका
शास्त्रों में है जिसका बहुत गुणगान
ऊँची ऊँची पहाड़ी है
यह आबू का स्थान
रहते ब्राह्मण ऊँच कोटि
के पाते विश्व में सम्मान
फ़रिश्ते बन सदा ऊँची स्थिति में रहते
उडती कला से करते सर्व का कल्याण
आबू दुनिया का वंडर नंबर वन
विदेशी भी करते नमन ,
शीश झुकाते,करते प्रणाम
जगदम्बा माँ ने किया
यहाँ से सब का उद्धार
मनोकामना हुए उसकी पूरी
जिसने रखा यहाँ पाँव
सर्व की सद्गति करने आता
यहाँ हमारा राम
आत्मा का परमात्मा से यहाँ
सम्मुख मिलन होता
दिलखुश मिठाई मिलती जब

होती उनसे रुह रिहान
तन मन शीतल हो जाता
रुप ही बदल जाता
स्वर्ग के परिजादे बन निकलते
दे कर अपना देह अभिमान
तपस्या की भट्टी से आत्मा
बन जाती कंचन
निखर जाती सूरत, रूहानियत
सीरत में झलकती
जब बाप दादा की दृष्टि उस पर पड़ती
धन्य धन्य हो जाते प्रभु मिलन
का सुख जो होता प्राप्त
भाग्य के गुणगान करने लगता मन
धरती पर पैर न टिकते फ़रिश्ते
सी हो जाती उसकी चाल।

ॐ शांति!!